IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"शेखावाटी की आध्यात्मिक विरासत: सीकर जिले के प्रमुख मंदिरों का ऐतिहासिक एवं पर्यटन अध्ययन"

नरेन्द्र सुंडा

शोधार्थी, इतिहास विभाग ,

राजकीय लोहिया महाविद्यालय चूरू, राजस्थान,भारत।

डॉ. दिनेश कुमार चारण

शोध पर्यवेक्षक, आचार्य, इतिहास विभाग,

राजकीय लोहिया महाविद्यालय चूरू, राजस्थान, भारत।

शोध सारांश: – राव शेखा व उनके वंशजों की भूमि शेखावाटी, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से न केवल राजस्थान प्रदेश में ही अपितु भारत और विश्व में भी अपना विशिष्ट महत्व रखती है। यह क्षेत्र शौर्य और बलिदानों की गौरव गाथा सुनाते गढ़-महल, त्याग और बलिदान की प्रतीक छतरियाँ, जल स्रोतों के प्रतीक कुएं, बावड़ी, तालाब, सेठ साहूकारों के वैभव को प्रदर्शित करती भव्य एवं विशाल हवेलियों और भित्ति चित्रकला के साथ-साथ अपनी गहरी धार्मिक जड़ों के लिए भी जाना जाता है। भौतिक पीड़ा से मानव जब उद्विग्न होता है तो वह अपने मानसिक शांति के लिए इन्हीं देवताओं की शरण में जाकर आत्म निवेदन करता है, मंदिर एवं देवालय उसकी श्रद्धा के प्रतीक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान के सीकर जिले की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर केंद्रित है। इस अध्ययन में शाकंभरी, खाटूश्यामजी, जीण माता और हर्षनाथ जैसे प्रमुख मंदिरों के ऐतिहासिक महत्व, स्थापत्य कला और पर्यटन की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि धार्मिक सांस्कृतिक स्थलों का पर्यटन न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल देता है, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द: – शेखावाटी, सीकर, आध्यात्मिक विरासत, पर्यटन, स्थापत्य कला।

प्रस्तावना :- राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र प्राचीन काल से ही 'वीर और भक्ति' की भूमि रहा है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से व्यापार ,संस्कृति और स्थापत्य का प्रमुख केंद्र रहा है। सांस्कृतिक दृष्टि से सीकर जिला शेखावाटी क्षेत्र का एक भाग है। शेखावाटी के प्रवेश द्वार के रूप में प्रसिद्ध यह जिला आध्यात्मिक विरासत में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहां के मंदिर केवल पूजा - अर्चना के केंद्र नहीं हैं,बल्कि वह उस समय के इतिहास, समाज और कला के जीवंत दस्तावेज हैं। इन मंदिरों का, धार्मिक सांस्कृतिक स्थलों के रूप में निर्माण राजा महाराजा और सेठ- साहूकारों ने करवाया था। कुछ स्थान ऐसे भी हैं जिनका निर्माण साधुओं ने अपने सतत श्रम से करवाया था। इस क्षेत्र से हमें कुछ लघु शिलालेख भी प्राप्त होते हैं जो इन मंदिरों के इतिहास निर्माण की प्रमाणिक जानकारी प्रदान करते हैं। मध्यकालीन हिंदू वास्तुकला और स्थानीय लोक-मान्यताओं का मिश्रण इन मंदिरों को अद्वितीय बनता है। इन स्थानों पर वार्षिक मेले लगते हैं जिनमें लाखों लोग श्रद्धा से अभिभूत होकर इनमें स परिवार भाग लेते हैं। मंदिरों में जनसाधारण की बड़ी भीड़ लगती है। यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि मंदिर निर्माण परंपरा ने स्थानीय समाज और अर्थव्यवस्था को गहराई प्रभावित किया।

शोध के उद्देश्य

. सीकर जिले के प्रमुख मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अन्वेषण करना।

. इन मंदिरों की वास्तुकला और सांस्कृतिक महत्व को समझना।

. क्षेत्र में धार्मिक सांस्कृतिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं का आकलन करना।

प्रमुख मंदिरों का ऐतिहासिक अध्ययन

*शक्तिपीठ शाकंभरी देवी

शाकंभरी का मंदिर शेखावाटी का प्राचीन मंदिर है। शक्तिपीठ शाकंभरी का पवित्र देवालय सीकर जिले में स्थित है। उदयपुरवाटी से लगभग 15 किलोमीटर दक्षिण और खंडेला से भी इतनी ही दूरी पर स्थित है। शाकंभरी देवी जिसे सकराय माता भी कहते है,शेखावाटी क्षेत्र के ब्राह्मण एवं वणिक समाजों के विभिन्न गोत्र, शाखाओं व परिवार की कुलदेवी है।

इस मंदिर से पश्चिम दिशा में थोड़ी दूर पर सकराय नामक एक छोटा गाँव है। इसी से देवी का नाम सकराय हुआ। शाकंभरी नाम अधिक प्रसिद्ध है। वस्तुतः देवी का नाम शंकरा है जो आगे चलकर शाकंभरी हो गया। देवी का नाम शाकंभरी किसी प्राचीन शिलालेख में नहीं पाया जाता है पर यह नाम काफी पुराने समय से प्रचलित है। वि.1700 में हस्तलिखित ग्रंथ 'लोहार्गल महात्म्यम' में इस स्थान का नाम शाकंभरी ही आया है। इसी प्रकार डूंडलोद ठिकाने के संग्रह में 'पलकदरियाव' ग्रंथ में भी यही नाम प्राप्त होता है। इस पुस्तक की रचना वि. 1900 में हुई थी।

देवी के स्थान पर तीन प्राचीन शिलालेख लगे हुए हैं दो शिलालेख पूर्वी द्वार के दोनों ओर तथा तीसरा सभा मंडप के पार्श्व भाग में बाहर की ओर लगा है। यह शिलालेख 699 ,1056 व 1155 विक्रम के हैं इन शिलालेख की तिथियां पर विद्वानों में मतभेद हैं। शिलालेखों में केवल जीर्णोद्धार का उल्लेख मिलता है शाकंभरी मंदिर के निर्माण का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता।

निज मंदिर में शाकंभरी एवं ब्रह्माणी की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। पहले यहां देवी, कुबेर और गणेश की तीन मूर्तियाँ निज मंदिर में प्रतिष्ठित थी जिनमें से गणेश और कुबेर की मूर्तियाँ सभा मंडप में स्थापित कर दी गयी और शाकंभरी के साथ ब्रह्माणी की मूर्ति प्रतिष्ठित कर दी गयी। देवी के आठ हाथ तथा उनके चरणों में उल्लू की एक प्रतिमा है। पहले मंदिर का मुख्य द्वार उत्तराभिमुख था अब यह पूर्वाभिमुख है।

इस मंदिर का जीर्णोद्धार नवलगढ निवासी सेठ रामगोपाल डांगयाच ने विक्रम में 1970 में करवाया। नवीन मंदिर का प्रतिष्ठा समारोह वैशाख शुक्ल सप्तमी संवत 1980 में हुआ।

शाकंभरी देवी के कुंड वि.2010 में बनाए गये। जलधारा के पास जटा शंकर का प्राचीन मंदिर बना हुआ है। यहां शिव के अलावा गणेश की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित है। मंदिर के पास बाईं ढलान पर मदन मोहन जी का मंदिर है। इसका निर्माण खंडेला के राजा वृंदावन दास ने करवाया था।

मंदिर की महंत गद्दी पर नाथ संप्रदाय का अधिकार है। पहले सेवा पूजा गुर्जर जाति के भोपा करते थे। बाद में नाथ संप्रदाय के अनुयायी शिवनाथ जी यह कार्य करने लगे। यहां कई महंत हो चुके हैं। वर्तमान महंत दयानाथ जी है। यह 23वें महंत बताए जाते हैं।

मंदिर में पहले कालीजी की प्रतिमा को मदिरा और पशु बलि समर्पित की जाती थी एवं ब्राह्मणी के शाकाहारी भोग लगाया जाता था। यह पशु बलि संवत 1980 में बंद कर दी गई अब दोनों देवियों को सीरा-पूड़ी का भोग लगाया जाता है।

जीण माता मंदिर

जीण माता लोक देवी के रूप में प्रसिद्ध है इसके पूजकों की संख्या बहुत बड़ी है जीण माता का मंदिर सीकर से 32 किलोमीटर और गोरिया से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 'जीण' वस्तुतः जयंती देवी है जिसका पुराणों में वर्णन आता है यह नव दुर्गाओं में से एक है। इसका उल्लेख भागवत पुराण में नवें स्कंध में आता है। यहां भुवनेश्वरी का मंदिर जीणमाता के मुख्य मंदिर के पार्श्व में एक तलघर में स्थित है। इसे भंवरों की माता कहते हैं।

जीण और हर्ष के संबंध में एक लोक कथा इधर प्रचलित है। घांघू के राव के कई पुत्र और एक पुत्री जीण थी। एक बार उसकी भावज ने इस पर एक व्यंग कर दिया जिससे आहत होकर जीण ने घर छोड़ दिया, इसे खोजने इसका छोटा भाई हर्ष निकाला और जीण के वर्तमान मंदिर के स्थान इसे तपस्या रत अवस्था में देखा। उसने अपनी बहन को घर ले जाने का प्रयत्न किया पर तपस्या से अर्जित आध्यात्मिक सुख को छोड़कर उसने घरेलू जीवन में लौटने में रुचि नहीं दिखाई। निदान एवं पर्वत श्रेणी के शिखर पर बैठकर हर्ष भी तपस्या रत हो गया। जीण और हर्ष के मंदिर पास पास बने हुए हैं।

जीण के मंदिर के सभामंडप के स्तंभों पर कई लेख खुदे हुए हैं, जिनसे मंदिर की प्राचीनता ज्ञात होती है। जीण और उसके आसपास के क्षेत्र में करीब 22 शिलालेख पाए गए हैं अधिकांश लेख मंदिर के जीर्णोद्धार से संबंधित है। मंदिर के निर्माण की निश्चित तिथि ज्ञात नहीं है संभवतः यह विक्रम की 10वीं शती में बना है। यह चौहानों द्वारा बनवाया हुआ मंदिर माना जाता है। इसकी सेवा पूजा पाराशर वंशी करते हैं। वैसे सांभरिया खांप के चौहान मुख्य पुजारी हैं।

मंदिर की स्थापत्य कला अपना प्रभाव छोड़ती है, मंदिर के मुख्य मंडप के स्तंभों तथा सीलिंग पर वाममार्गी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। फूल पत्ते बने हुए हैं जिनकी कला उच्च कोटि की है विशाल पत्थर पर

देवी की मूर्ति अनुटंकित है। यह अष्टभुजा वाली सिंह पर चढ़ी हुई महिषासुर राक्षस का विनाश कर रही है। पूरी मूर्ति पर सिंदूर लगा होने के कारण देवी का केवल मुख ही दिखाई देता है।

मंदिर के पास काजल शिखर पर एक लघु मंदिर बना हुआ है यहां चारभुजा वाली देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है, जो सिंह पर सवार है। यहां अखंड ज्योति जलती है।

जीण माता के मंदिर के पास रलावता नामक छोटा गांव है जहां पर एक लघु स्मारक प्राचीन काल में बना हुआ था। अभी विशाल स्वरूप प्रदान कर दिया गया है। राव शेखा की मृत्यु लड़ाई में घाव लगने से यही हुई, यही अपने पुत्र रायमल को उसने ढाल और तलवार सौंप दी।

चैत्र और आश्विन मास में यहां बड़े मेले लगते हैं, जिनमें लाखों लोग भाग लेते हैं। जीण के मंदिर के पास एक जल से भरा तालाब है जहां लोग स्नान कर दर्शन लाभ प्राप्त करते हैं।

हर्षनाथ मंदिर

हर्ष का शिव मंदिर सीकर जिले का एक प्राचीन धार्मिक स्थल है। यह शेखावाटी का ही नहीं राजस्थान का कला दृष्टि से एक उन्नत मंदिर है।

डिस्ट्रिक्ट सेंक्शस हैंडबुक के अनुसार हर्ष पहाड़ की दूरी सीकर से 13 किलोमीटर है जबकि डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार यह दूरी 14 किलोमीटर है। पहाड़ की ऊंचाई सर्वे विभाग के अनुसार 2988 फिट है और डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार 3000 फिट है।

यहां पर चौहानों के शासनकाल में एक विशाल देवालय बनाया गया था। यहां वि.स.1030(973 ई.) का 48 पंक्तियों का एक शिलालेख है। इस शिलालेख में इस मंदिर के निर्माण, अलंकरण साधनों आदि की विस्तृत जानकारी मिलती है। हर्ष मंदिर का निर्माण महात्मा अल्लट ने करवाया था, जो पाशुपत संप्रदाय के साधु थे। यहां गुवक प्रथम का बनाया हुआ एक छोटा मंदिर पहले से विद्यमान था।

मंदिर कुछ शताब्दियों पूर्व टूटकर गिर गया था। आज पार्श्व की दीवारे टूटी हुई हैं। शिखर गिर गया है पर सभा मंडप एवं गर्भ गृह विद्यमान है। मंदिर की सीलिंग पर तथा गर्भ ग्रह में जो अर्द्ध मानवाकार एवं सुरसुंदरियों की मूर्तियाँ लगी है वे इसकी कलात्मक उत्कृष्टता को साबित करने में पर्याप्त हैं। मंदिर के सामने भग्न नंदीश्वर की श्वेत संगमरमर की विशाल प्रतिमा विराजमान है। मंदिर के आगे पीछे अनेक अवशेष छितराए हुए हैं। कुछ वर्ष पूर्व वर्षा के कारण मंदिर के पास की भूमि में कटाव हो गया था इसमें से चतुर्भुज विष्णु की एक सुंदर प्रतिमा निकली जो कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। भगवान शंकर का यह मंदिर जो हर्षनाथ के नाम से प्रसिद्ध था भूतकाल में किसी समय गिर गया। हमें समय निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है गिरने के कारण का पता नहीं है। एक बात निश्चित है, कि जब राव शिवसिंह ने पास में एक शिव मंदिर बनाया तो उस समय तक पुराना मंदिर गिर चुका था। नया शिव मंदिर वि.1775 में बन गया था इसमें पुराने मंदिर के कुछ मूर्ति समूह लगे हुए हैं। 1834 ई. में डॉ. जी. ई रेनकिन और सार्जेंट ई.डिन ने इसे देखा तब तक अवशेष पड़े हुए थे, उन्होंने अवशेषों से शिलालेख निकाल लिया। सन् 1934 वेब सीकर में सीनियर ऑफिसर बनकर आया, यह कला प्रेमी था। उसने हर्ष के करीब 200 अवशेषों से सीकर के महामंदिर में एक म्यूजियम बनाया। वेब के जाने पर म्यूजियम तोड़ दिया गया और अवशेषों को विलुप्त कर दिया गया।

हर्ष मंदिर के यह कलात्मक अवशेष विदेश में भेज दिए गए। आज विदेश के अनेक निजी संग्रहालय में हर्ष की मूर्तियां पाई जाती हैं। हर्ष पहाड़ का यह मंदिर केंद्रीय पुरातत्व विभाग के अंतर्गत आता है। जहां रक्षक रहते हैं,कुछ मूर्तियां इन रक्षकों के पास कई कमरों में है। कुछ सीकर के राव राजा के आवास में पड़ी है और कुछ सीकर म्यूजियम में है। यह मूर्तियां आज भी अपनी उत्कृष्ट कलात्मकता की कहानी कहती प्रतीत होती हैं।

हर्ष मंदिर के आगे पर्वत पर काल भैरव का मंदिर है जहां एक मेला लगता है। लोग हर्ष के भैरव की जात देते हैं और मनौतियां मांगते हैं। इस मंदिर के स्तंभ भी कलात्मक है संभवतः यह हर्षनाथ मंदिर के स्तंभ है जो यहां लाकर खड़े कर दिए गए हैं।

हर्षनाथ मंदिर स्थापत्य एवं मूर्ति कला का एक अनमोल रत्न है। इस सांस्कृतिक धरोहर पर सीकर को गर्व है।

खाटू श्याम जी मंदिर

खाटू सीकर का एक प्राचीन स्थान है। इसे हर्ष शिलालेख (1030 विक्रमी) में खट्टकूप नाम से संबोधित किया गया है। इसी खाटू में श्याम बाबा का प्रसिद्ध मंदिर बना हुआ है। खाटू श्याम जी सीकर से 65 किलोमीटर और रिंगस से 16 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।

वर्तमान मंदिर के पूर्व बाबा का एक छोटा मंदिर इस स्थान पर बना हुआ था जिसे मुसलमानों ने नष्ट कर दिया था। इस मंदिर के विनष्ट होने पर नया मंदिर जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के आदेश से विक्रम संवत 1777 में बना। यह बात मंदिर में लगे एक शिलालेख से ज्ञात होती है।

किंवदंती है कि श्याम बाबा की मूर्ति खाटू श्याम कुंड से निकली थी। बाद में श्याम बाबा बर्बरीक के सिर के रूप में खाटू धाम में प्रतिष्ठित हुए। कहते हैं कि एक ब्राह्मण की गाय कुंड के पास चरने जाती थी। वहां कोई अदृश्य शक्ति उसका दूध खिंच कर पी लेती थी। ब्राह्मण ने एक दिन गाय का पीछा किया तो दूध की धारा जमीन में जाती हुई दिखाई दी। जमीन को खोदा तो श्याम बाबा की प्रतिमा निकली।

किंवदंती के अनुसार खाटू कभी खटाक नगरी थी। जहां के राजा को स्वप्न में दर्शन हुआ कि मेरा मंदिर बनवाओ और ब्राह्मण से प्रतिमा लेकर मंदिर में स्थापित करो। राजा ने ऐसा ही किया तभी से मंदिर में श्याम बाबा की प्रतिमा स्थापित है।

श्याम बाबा का वर्तमान मंदिर श्वेत संगमरमर पत्थर का बना हुआ है। यहां मंदिर, कुंड और शाम बगीची भी बने हुए हैं। श्याम कुंड में स्नान करने का बड़ा महत्व है। गांव में दो कुंड है जिसमें से एक प्राचीन कुंड का जीर्णोद्धार हुआ है। जनाने कुंड का निर्माण नये सिरे से कर दिया गया है। कुंड के ऊपर बरामदे में चारों ओर गीता के 18 अध्यायों के श्लोक अंकित है।बाबा के श्रृंगार हेतु श्याम बगीची से पुष्प लाये जाते हैं। बगीची में श्री रघुनाथ जी का एक सुंदर मंदिर बना हुआ है।

खाटू में बाबा मंगलदास एवं खंडेला के शासक फतेह सिंह की छतरियां बनी है। खाटू के पश्चिम भू-भाग में निरंजन संप्रदाय के महात्मा शीतलदास का एक मंदिर अवस्थित है।

श्याम बाबा का कार्तिक में छोटा मेला तथा फाल्गुन में बड़ा मेला लगता है। होली से पहले एकादशी एवं द्वादशी को एक बड़ा मेला यहां लगता है। भक्त लोग कनक दंडवत करते हाथों में ध्वजा लिए

मंदिर के दर्शन करने आते हैं। मनौती पूर्ण होने पर लोग यहां मुंडन करवाने आते हैं।मेले के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

खाटू श्याम मेले के कारण खूब विकास हुआ है। बाहर के लोग आकर यहां बस गए हैं एवं व्यापार में वृद्धि हो रही है। दिनों दिन खाटू के श्याम बाबा की प्रसिद्ध बढ़ रही है। जिससे लाखों लोग मेले के अवसर पर यहां आते हैं। जिसका लाभ स्थानीय जनता को मिलता है।

पर्यटन अध्ययन

पांच हजार से भी अधिक पुरानी भारतीय संस्कृति की मूल धारा वस्तुतः अध्यात्म पर ही केंद्रित है। विश्व के अनेक देशों ने भारतीय प्राचीन संस्कृति और धर्म में विश्वास जताते हुए यहां के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। शेखावाटी एवं इसके सीकर जिले के धार्मिक सांस्कृतिक स्थलों ने इस संस्कृति को आगे बढ़ने का कार्य किया है। विश्व पर्यटन रुझान के आंकड़े व स्थानीय पर्यटन के आंकड़े यही कहते हैं।

***सीकर जिले में पर्यटन आंकड़े (2024- 2025)**

धार्मिक स्थल	2024 में पर्यटक	2025 में पर्यटक
खाटूश्याम जी	2,36,00,000	2,58,00,000
जीणमाता	17,53,000	21,78,000
शाकंभरी	05,62,000	07,07,000
हर्षनाथ	05,07,000	05,34,000
कुल	2,66,22,000	2,94,19,000

*आंकड़े पर्यटन विभाग के अनुसार

***नाइट स्टे करने वाले पर्यटक**

श्रेणी	2024	2025
भारतीय पर्यटक	7,93,474	7,93,773
विदेशी पर्यटक	0860	1240
कुल नाइट स्टे	7,94,334	7,95,013

*आंकड़े पर्यटन विभाग के अनुसार

सीकर जिले में धार्मिक पर्यटन लगातार बढ़ता जा रहा है। आंकड़ों पर नजर डालें तो साल 2025 में जिले के चार प्रमुख स्थलों खाटूश्याम जी, जीणमाता ,शाकंभरी व हर्ष पर ही कुल 2 करोड़ 94 लाख पर्यटक पहुंचे हैं, जो 2024 के मुकाबले करीब 28 लाख ज्यादा है। इनमें 22 लाख की बढ़ोतरी से सहित सबसे ज्यादा 2.58 करोड़ पर्यटक खाटूश्याम जी धाम पहुंचे। खास बात यह भी है कि यह दौरान जीणमाता,शाकंभरी व हर्ष में भी आने वाले पर्यटकों की संख्या में 6 लाख का इजाफा दर्ज है। इस तरह जिले में पर्यटन के लिए आकर रात्रि ठहराव करने वाले पर्यटकों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है।

जिला पर्यटक विभाग के अनुसार 2024 के 860 के मुकाबले 2025 में 1240 विदेशी पर्यटकों ने जिले में पर्यटन का लुफ्त लिया। इस प्रकार 47 फीसदी विदेशी पर्यटक भी बड़े।

सीकर जिले में पर्यटन बनने का कारण खाटूश्याम जी व जीणमाता जी सरीखे के धार्मिक स्थल में मेलें हैं। जयपुर व दिल्ली दोनों राजधानी से नजदीक तथा बेहतर सड़क व रेल संपर्क और प्रशासन द्वारा बढ़ाई जा रही सुविधाओं की वजह से भी पर्यटकों को यहां काफी सहूलियत मिल रही है। पर्यटकों की आवक बढ़ने से जिले में होटल, धर्मशालाओं और स्थानीय व्यापार को भी सीधा लाभ मिल रहा है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सीकर की आध्यात्मिक विरासत में इतिहास और आस्था का गहरा समन्वय है। यहां के मंदिरों में पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार क्षमता है। हालांकि, शाकंभरी और हर्षनाथ जैसे ऐतिहासिक स्थलों के बेहतर संरक्षण और बुनियादी सुविधाओं के विकास की आवश्यकता है। यदि धार्मिक पर्यटन को विरासत संरक्षण के साथ जोड़ा जाए तो यह शेखावाटी की वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.आर्य, एच.एस., द्वितीय संस्करण 2013: शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन जयपुर।

2. गुप्ता, मोहनलाल, प्रथम संस्करण 2004: जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, नवभारत प्रकाशन जोधपुर।

3. मिश्र, रतनलाल, प्रथम संस्करण जुलाई 1984: शेखावाटी का इतिहास, राजेंद्र मिश्र मंडावा झुंझुनू।

4. मेहता, अमित,प्रथम संस्करण 2022: शेखावाटी का इतिहास और स्थापत्य यूनिट ट्रेडर्स जयपुर।

5. प्रकाश,टी. सी., प्रथम संस्करण 1993: शेखावाटी वैभव, शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान शिमला जिला झुंझुनू।

6. शेखावत,सुरजनसिंह, द्वितीय संस्करण 2014:शेखावाटी पर प्रदेश का प्राचीन इतिहास, सुरजन सिंह शेखावत स्मृति संस्थान प्रकाशन, झाझड़ झुंझुनू।

7..स्वामी ,गोपालराम, द्वितीय संस्करण अप्रैल 2006: शेखावाटी सांस्कृतिक केंद्र ,नगर एवं कस्बे ,डॉक्टर गोपाल राम स्वामी सीकर राजस्थान।

8. व्यास, राजेश कुमार, छठा संस्करण 2019: पर्यटन उद्भव एवं विकास राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर।

9. राजस्थान पत्रिका ,सीकर संस्करण, 22 जनवरी 2026.

10. Rajasthan District Gazetteers: Sikar 1978.

11. प्रगति प्रतिवेदन 2025,पर्यटन मंत्रालय, राजस्थान सरकार।

12. वार्षिक रिपोर्ट 2024- 2025, पर्यटन मंत्रालय, राजस्थान सरकार।